Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ महाशिवरात्रि व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ भील और बेलपत्र की कथा ॥

यह महाशिवरात्रि पर कही जाने वाली व्याध और हिरणों की प्रचलित कथा का संक्षिप्त लोक-रूप है। अलग क्षेत्रों में पात्रों और प्रसंगों का वर्णन बदल सकता है।

एक वन में गुरुद्रुह नाम का भील अपने परिवार के साथ रहता था। वह शिकार करके घर चलाता था। एक दिन उसे भोजन के लिए कोई शिकार न मिला। संयोग से उस दिन महाशिवरात्रि थी। भूखा-प्यासा भील रात में तालाब के पास एक बेल के पेड़ पर चढ़कर प्रतीक्षा करने लगा।

उसे पता न था कि पेड़ के नीचे शिवलिंग है। रात के पहले प्रहर में एक हिरणी पानी पीने आई। भील ने धनुष उठाया तो उसके पात्र से जल और डाल से बेलपत्र नीचे शिवलिंग पर गिर पड़े। हिरणी ने अपने बच्चों को सुरक्षित छोड़कर लौटने का वचन दिया। उसकी बात सुनकर भील ने उसे जाने दिया।

दूसरे प्रहर में दूसरी हिरणी आई। भील के हिलने से फिर जल और बेलपत्र शिवलिंग पर अर्पित हो गए। उसने भी अपने बच्चों के लिए समय माँगा और वापस आने का आश्वासन दिया। भील ने उसे भी जाने दिया।

तीसरे प्रहर में एक हिरण आया। वही संयोग फिर हुआ। हिरण ने अपने परिवार से मिलकर लौटने की बात कही। भील के मन में धीरे-धीरे विश्वास और करुणा जाग रही थी; उसने हिरण को भी लौटने की अनुमति दी।

॥ चौथे प्रहर में मन का परिवर्तन ॥

चौथे प्रहर में हिरण और हिरणियाँ अपने वचन के अनुसार बच्चों सहित लौट आए। भील ने धनुष उठाया तो एक बार फिर जल और बेलपत्र शिवलिंग पर गिरे। पूरी रात जागरण, अनजाने में हुए जलाभिषेक और बेलपत्र अर्पण के बीच उसका मन बदल चुका था।

उसने सोचा कि ये प्राणी अपने वचन को निभाने के लिए प्राणों की चिंता किए बिना लौटे हैं। ऐसे जीवों को मारना उचित नहीं। उसने धनुष नीचे रख दिया और हिरणों को निर्भय होकर वन में जाने दिया।

कथा में कहा जाता है कि शिवजी उसकी जागी हुई करुणा से प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद दिया। भील ने शिवजी को प्रणाम किया। इस प्रसंग को महाशिवरात्रि की रात में शिव-स्मरण और जीवों के प्रति दया के महत्व से जोड़ा जाता है।

कथा का संदेश

व्रत का भाव केवल भूखे रहने में नहीं, बल्कि वचन निभाने, हिंसा छोड़ने और दूसरों के जीवन का सम्मान करने में भी है। कथा श्रद्धा से सुनें; इसे किसी व्यक्ति के जीवन के फल की निश्चित गारंटी के रूप में न लें।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥